BA part-I LKH) Date- 08.05.2020

(2)

प्रश्न: जओं हरि न जाइब तोहें तसु गेहा। आज कओनहु परि न धरति देहा। - - - - -

विरहानल ताप्ति तनु जाँती। धरए धमित हृदक केँगारी।।

उत्तर: प्रस्तुत पद्यांश मैथिली प्राचीन गीतावली मे संकलित चतुरभुजक रचना थिक। जे मालव रागक अछि। चतुरभुजक समकक्ष आओर अनेक रचना उपलब्ध भेल अछि, जाहिसँ गोविन्ददास आ उमापति समकक्ष रचनाकारक रूपमे हिनक स्थान अछि। जारद हिनक परिचय म० म० परमेश्वर झा मिथिला तत्व विमर्श मे एहीसँ देहि रूपे देने छथि। यथा - 'बलियासँ पाण्डवराय पदाङ्कित महामहो रघुनन्दन सुतौ राय-चतुर्भुज रायभुजंगो बलायति पाली सँ दीनु दौ।" हिनक कार्यकाल सोलहम - सत्रहम शताब्दीक बीच मानल जाइछ। प्राचीन गीतावलीमे 21टा गीत संकलित अछि।

एहि गीतमे विरहाग्निमे दग्ध - नायिका अपन दूतीसँ कहैत छथि आब ता' हम देह धारण करबामे

समर्थ नहि रहब। हमर विरहानल मांसिक समान
चलि रहल अछि। हम ओहि तापमे जड़ि जायब।
तैं एकर औषधि अहाँ उपचार करू। आब हमर
साँसा सेहो मन्द पड़ि रहल अछि। नहि - नहि अहाँ
धैर्य धारण करू हरि (अहाँक प्रियतम) अवश्य औताह।
ई हमरा विश्वास होइछ। कवि कहैत छथि जे
जिनका भजैत छथि ओ हुनकासँ अवश्य भेंट करै
छथिन्ह। अहाँ एतेक दुखी नहि होउ, हुनका
लेल त' ई एक छोट बात छनि। हरि सभकेँ
आस पुरबै छथिन्ह। अहूँक आब के पुरैबे करताह।

: पाबरैं गढ़ल हृदय तुअ मानिनि तहिं कुचगिरि परमाने।
की कुच सैल समाऊैं कठिन भेल के अवधारए जाने ॥

र : प्रस्तुत पद्यांश मैथिली प्राचीन गीतावलीमे संकलित
प्राचीन कवि चतुरचतुर्भुज रचित अछि जे विनाश रस के
निबद्ध अछि।

नायक अपन प्रिया कें अनेक उपमासें भव्य
हास - परिहास करैत कने स्वीं स्वयबक चेष्टा सेहो
करैत छथि। प्रिय हमरा त' एतेक उच्च गिरि
शिखर कें समान अहांक कुच युगल से ओहिना
बुझाइत अछि। तें विश्वास होइत अछि जे हृदयो
पाथरेक अछि। अहांक कुच युगल तें गिरि
ओहन कठिन गिरि शिखर
समूह बुझा जाइछ। ऐहन कठिन गिरि शिखर
कें स्वीकार करताहे। जे कुच - युगल रूपी
शिखरसें प्रेम करत से जी - जान अवधारए कान्ते

रानी मिश्रा
मैथिली विभाग
R.N college!

Scanned with CamScanner